**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 22-10-2024, Accepted: 21-11-2024, Published: 06-12-2024**
**Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 55-57**

# भारतीय परिदृश्य में आधुनिकता की सामान्य अवधारणा और मुक्तिबोध

**वर्षा महिवाल**
हिंदी विभाग, दिशा डेल्फी पब्लिक स्कूल, कोटा, राजस्थान, भारत

**सारांश**
आधुनिकता की अवधारणा में सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक परिवर्तनों की एक जटिल परस्पर क्रिया शामिल है, जिसने समाज को आकार दिया है, विशेष रूप से उत्तर–औपनिवेशिक भारत के संदर्भ में। मुक्तिबोध, एक प्रमुख हिंदी कवि, आधुनिकता और आधुनिकता के बीच तनाव को दर्शाते हुए, इन विषयों को अपने काम में प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता आधुनिकता के कारण उत्पन्न विसंगतियों को संबोधित करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है, जिसका उद्देश्य सौंदर्यवादी अभिव्यक्ति को सामाजिक–राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ समेटना है।
भारतीय समाज में आधुनिकता का विचार कई मायनों में अलग–अलग रूपों में प्रस्तुत किया गया है, और यह अवधारणा न केवल पश्चिमी प्रभावों से प्रेरित है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में भी विकसित हुई है। इस विषय पर विचार करते हुए मुक्तिबोध का योगदान महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनका लेखन और दृष्टिकोण भारतीय आधुनिकता के एक गहरे और प्रासंगिक विमर्श का हिस्सा है।

**मूल शब्दः** मुक्तिबोध, आधुनिकता, सौंदर्यवादी अभिव्यक्ति, भारतीय सांस्कृतिक, प्रासंगिक विमर्श

गजानंद माधव मुक्तिबोध (१३ नवंबर १९१७–११ सितम्बर १९६९) बीसवीं सदी के प्रमुख कवि, निबंधकार, साहित्यिक और राजनितिक कथा लेखकों में से एक थे। इन्हे हिंदी कविता के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है। इन्होने आधुनिकतावाद के निर्माण को कहानी के माध्यम से जन्म दिया, जिसमे आदर्शवादी कल्पना, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, चाँद का मुँह टेढ़ा, अँधेरे में और भूरी भूरी खाक धुल आदि की प्रमुख भूमिका रही।
आधुनिकता की विशेषता सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर बदलाव है, जो औद्योगीकरण और युक्तिकरण द्वारा चिह्नित है (मंडल, 2014)। यह एक द्वंद्व प्रस्तुत करता हैः एक पहलू स्वतंत्रता और समानता जैसे आदर्शों को बढ़ावा देता है, जबकि दूसरा उपनिवेशवाद और नस्लवाद जैसे अंतर्निहित मुद्दों को प्रकट करता है (किज़िलकेलिक, 2018)। यह द्वंद्व मुक्तिबोध के काम में स्पष्ट है, जहां वे आधुनिकता के गहरे सामाजिक प्रभावों की खोज करते हुए इसके सतही पहलुओं की आलोचना करते हैं (सिंह, 2024)।
मुक्तिबोध की कविता आधुनिकतावादी सौंदर्यबोध को प्रतिबिंबित करती है जो आधुनिकता से होने वाले नुकसान को संबोधित करने का प्रयास करती है (सिंह, 2024)। उनका मार्क्सवादी दृ-ष्टिकोण उत्तर–औपनिवेशिक भारत के सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य की आलोचना करता है, आधुनिकता से उत्पन्न होने वाली विभाजित व्यक्तिपरकता पर जोर देता है (गौतम, 2012)। मुक्तिबोध अपने काम के माध्यम से दमनकारी आधुनिक परिस्थितियों के बीच रचनात्मक स्वतंत्रता के संघर्ष को दर्शाते हैं। मुक्तिबोध की कविता जहां आधुनिकता की आलोचना करती है, वहीं यह तेजी से बदलती दुनिया में अर्थ और पहचान की खोज का भी प्रतीक है। यह तनाव आधुनिकता के व्यापक निहितार्थों को उजागर करता है, यह सुझाव देता है कि इसके लाभ अक्सर व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान के लिए एक महत्वपूर्ण कीमत पर आते हैं।
आधुनिकता, जैसा कि मुक्तिबोध की कविता में खोजा गया है, पूंजीवाद और शासन से प्रभावित निरंतर परिवर्तन का प्रतीक है। उनका काम रचनात्मक स्वतंत्रता को सामाजिक–राजनीतिक नुकसान के साथ समेटने का प्रयास करता है, और सौंदर्य और राजनीतिक क्षेत्रों के बीच अलगाव को संबोधित करने के लिए आधुनिकतावादी सौंदर्यशास्त्र का उपयोग करता है [Singh 2024]। मुक्तिबोध के काम में आधुनिकता मार्क्सवादी विचार और पारंपरिक भारतीय साहित्यिक और आध्यात्मिक विरासत के बीच संघर्ष को दर्शाती है। उनकी कविता "विभाजित व्यक्तिपरकता" का प्रतीक है, जो पश्चिमी और भारतीय प्रभावों का विलय करती है, जो भारतीय संस्कृति में अद्वैतवाद और आनंद के पहले के आदर्शों से प्रस्थान का प्रतीक है [गौतम 2012]।
मंडल [2014] ने अपने परिदृश्य में आधुनिकता की चर्चा सामंतवाद से पूंजीवाद की ओर बदलाव के रूप में की गई है, जो औद्योगीकरण और युक्तिकरण की विशेषता है। मुक्तिबोध, एक प्रमुख व्यक्ति, आधुनिकता के अलगाव और दमन की आलोचना करते हैं, इस ढांचे के भीतर व्यक्तिगत स्वायत्तता और सामाजिक नियंत्रण पर विचार करते हैं।
किजिलसेलिक [2018] अपने पेपर में आधुनिकता पर द्वंद्व के रूप में चर्चा करता है, स्वतंत्रता और समानता के इसके सतही आदर्शों बनाम उपनिवेशवाद, नस्लवाद और नरसंहार की अंतर्निहित वास्तविकताओं पर प्रकाश डालता है। हालाँकि, यह विशेष रूप से मुक्तिबोध या आधुनिकता से संबंधित उनकी अवधारणाओं को संबोधित नहीं करता है। भांबरा [2015] इसे एक अवधारणा के रूप में आधुनिकता के ऐतिहासिक संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करता है, व्यक्तिगत व्याख्याओं या मुक्तिबोध जैसे विशिष्ट साहित्यिक हस्तियों पर ध्यान दिए बिना।
देलंटी और मोटा [2018] आधुनिकता को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन के रूप में चर्चा करता है, नए की चेतना पर जोर देता है। हालाँकि, यह विशेष रूप से मुक्तिबोध या आधुनिकता की अवधारणा में उनके योगदान को संबोधित नहीं करता है।
पेपर में आधुनिकता पर चर्चा की गई है, जो त्वरण और वैश्वीकरण की विशेषता है, जिससे लिम्बो में रहने के समान एक सतत संकट पैदा हो गया है। मुक्तिबोध, एक प्रमुख कवि, अक्सर अस्तित्व संबंधी संघर्ष और सामाजिक मुद्दों की खोज करते थे, जो आधुनिकता की जटिलताओं से मेल खाते थे [क्रिस्टोफ एवं अन्य 2018]। मेम्बे [2023] आधुनिकता की पश्चिमी–केंद्रित उत्पत्ति की आलोचना करता है, गैर–पश्चिमी विचार के बहिष्कार पर जोर

देता है। मुक्तिबोध, एक भारतीय कवि, एक प्रति–आख्यान का प्रतीक हैं, जो स्वदेशी दृष्टिकोण को एकीकृत करके प्रमुख आधुनिकता को चुनौती देते हैं, इस प्रकार आधुनिकता और न्याय की अधिक समावेशी समझ की वकालत करते हैं। त्रिपाठी [2021] भारत में गरीबी को दूर करने में विकास की भूमिका पर जोर देते हुए तर्क और वैज्ञानिक स्वभाव पर आधारित दृष्टिकोणों के एक समूह के रूप में आधुनिकता पर चर्चा करता है।

विल्की [1975] अपने पेपर में उपलब्धि–आधारित और श्रेय–आधारित समाजों के विपरीत, सामाजिक विकास और व्यक्तिगत विशेषताओं के संदर्भ में आधुनिकता पर चर्चा करता है। ग्रेडी [1999] ने अपने लेखन में आधुनिकता को व्यक्तित्व, पहचान और सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों से जुड़ी एक अवधारणा के रूप में चर्चा की गई है, जबकि मुक्तिबोध, एक प्रमुख कवि, मानव अनुभव पर आधुनिकता के निहितार्थ की आलोचना करते हैं, अस्तित्व संबंधी संघर्षों और समकालीन सामाजिक संदर्भों के भीतर अर्थ की खोज पर जोर देते हैं। ऐसेनस्टाड्ट [2001] आधुनिकता की चर्चा एक विशिष्ट सभ्यता के रूप में करता है जो व्याख्या के नए तरीकों और संस्थागत संरचनाओं की विशेषता है, खुलेपन और अनिश्चितता पर जोर देती है। मुक्तिबोध, एक प्रमुख कवि, आधुनिक संदर्भ में अस्तित्व संबंधी प्रश्नों की खोज करते हुए, इन विषयों को अपने काम में प्रतिबिंबित करते हैं। फुएल [2024] अपने लेखन को विशेष रूप दक्षिण एशियाई आधुनिकता की औपनिवेशिक प्रतिनिधित्व की आलोचना और ऐतिहासिक आख्यानों और आत्म–प्रतिनिधित्व को समझने में यूरोसेंट्रिज्म द्वारा उत्पन्न पद्धतिगत चुनौतियों पर केंद्रित है।

भट्टाचार्य [2020] आधुनिकता को औपनिवेशिक कार्यक्रमों द्वारा आकार दी गई एक सामाजिक–ऐतिहासिक स्थिति के रूप में चर्चा करता है, इसे भारत में विनाशकारी घटनाओं से जोड़ता है। मुक्तिबोध का काम इस आधुनिकता को प्रतिबिंबित करता है, संकट और असुरक्षा के विषयों की खोज करता है, शविनाशकारी यथार्थवादश की अवधारणा के साथ संरेखित करता है। सीमेंस [2011] ने अपने लेख में आधुनिकता की चर्चा श्रेष्ठता की कथा के रूप में की गई है, जो अक्सर गैर–आधुनिक समाजों को हाशिए पर धकेल देती है। मुक्तिबोध, एक महत्वपूर्ण साहित्यकार, इस आधुनिकता की आलोचना करते हैं, मानवीय अनुभव की जटिलताओं और प्रमुख आधुनिक आख्यानों से परे विविध ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यों को स्वीकार करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। शीला एवं अन्य मुक्तिबोध जैसी विशिष्ट हस्तियों की व्यक्तिगत व्याख्याओं या योगदानों पर ध्यान दिए बिना आधुनिकता के व्यापक विषय पर अपना लेखन केंद्रित करते है।

बोटेनबर्ग [1990] "आधुनिकता" पर एक ऐतिहासिक काल या क्षण के रूप में चर्चा करता है, और पश्चिमी विकास के साथ इसके जुड़ाव पर जोर देता है। हालाँकि, यह विशेष रूप से मुक्तिबोध या उनके योगदान को संबोधित नहीं करता है, बल्कि समाजशास्त्र में "आधुनिक" के विकास और अर्थों पर ध्यान केंद्रित करता है।

## भारतीय परिदृश्य में आधुनिकता की सामान्य अवधारणा

भारतीय समाज में आधुनिकता का अर्थ केवल पश्चिमी दृष्टिकोण को अपनाने या औद्योगिक विकास की ओर बढ़ने से नहीं था, बल्कि यह एक गहरी सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक क्रांति से जुड़ा हुआ था। आधुनिकता का विचार भारतीय समाज में धीरे–धीरे विकसित हुआ, विशेष रूप से ब्रिटिश उपनिवेश के दौरान, जब भारतीय समाज ने पश्चिमी शिक्षा, विज्ञान, और तकनीकी विकास को स्वीकार करना शुरू किया। इस समय के दौरान भारतीय विचारकों ने पश्चिमी लोकतंत्र, तर्कशीलता, और धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार किया, लेकिन इसे भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भों में संयोजित करने की कोशिश की। भारतीय आधुनिकता में पश्चिमी विचारों को आत्मसात करने के साथ–साथ भारतीयता की अपनी पहचान भी बचाने की कोशिश की गई। यह एक संघर्षपूर्ण यात्रा थी, जिसमें न केवल औद्योगिकीकरण, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी के विकास की ओर बढ़ना था, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और महिलाओं के अधिकारों जैसी आंतरिक समस्याओं का समाधान भी खोजना था। आधुनिकता की यह अवधारणा भारतीय समाज को पुराने ढांचों से बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी, ताकि एक समावेशी, प्रगति की ओर बढ़ता समाज बन सके।

## मुक्तिबोध और भारतीय आधुनिकता

मुक्तिबोध (1925–1964) हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि, कहानीकार और आलोचक थे। उनका लेखन भारतीय समाज के जटिलताओं, असमानताओं और संघर्षों को उजागर करने का प्रयास करता था। मुक्तिबोध की कविताओं में आधुनिकता की अवधारणा अक्सर निराशा, अस्तित्व की समस्याएं और मानसिक विक्षोभ के संदर्भ में प्रस्तुत होती है।

मुक्तिबोध ने भारतीय आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं को अपनी कविताओं और रचनाओं में बारीकी से चित्रित किया। वे उन काले पक्षों की पहचान करते थे, जो विकास और प्रगति की अंधी दौड़ में अनदेखे रह जाते हैं। उनके अनुसार, भारतीय समाज को सिर्फ बाहरी रूप से आधुनिक बनने से नहीं, बल्कि भीतर से जागृत होने की आवश्यकता है। वे इस बात को लेकर चिंतित थे कि भारतीय समाज के लिए ष्आधुनिकताष एक आंतरिक संघर्ष है, जो केवल बाहरी संरचनाओं और दिखावे से जुड़ी नहीं होनी चाहिए, बल्कि विचार, दृष्टिकोण और चेतना के स्तर पर भी बदलाव की आवश्यकता है।

मुक्तिबोध की कविताओं में "आधुनिकता" का तात्पर्य है समाज के भयंकर यथार्थ का सामना करना और सच्चाई को पहचानने की क्षमता रखना। उनकी प्रसिद्ध कविता "अंधेरे में" (जिसमें अंधकार और जीवन की जटिलता का चित्रण किया गया है) यह दर्शाती है कि आधुनिकता सिर्फ बाहरी दुनिया से नहीं जुड़ी है, बल्कि यह हमारे भीतर की अंधकारमय दुनिया, हमारे मानसिक और आत्मिक संघर्षों का सामना करने से भी जुड़ी है।

वे यह मानते थे कि यदि हम आंतरिक रूप से जागरूक नहीं हो पाए, तो कोई भी बाहरी परिवर्तन या तकनीकी प्रगति हमारे समाज को समृद्ध नहीं कर सकती। उनका यह विचार था कि सच्ची आधुनिकता तभी आएगी जब हम अपनी सामाजिक असमानताओं, शोषण और अन्याय को पहचान कर उन्हें समाप्त करने के लिए संघर्ष करेंगे।

## मुक्तिबोध और भारतीय समाज

मुक्तिबोध भारतीय समाज के भीतर व्याप्त अंतर्विरोधों, असमानताओं, और मानसिक जटिलताओं को उजागर करते हैं। उनकी कविताओं में एक तरह का शहरी और ग्रामीण, पुराना और नया, आधुनिक और पारंपरिक के बीच संघर्ष और तनाव दिखाई देता है। वे मानते थे कि भारतीय समाज में आधुनिकता के नाम पर जो परिवर्तन हो रहे हैं, वे अक्सर सतही होते हैं और वास्तविकता से दूर होते हैं।

उनकी कविताएँ हमें यह समझाने की कोशिश करती हैं कि यदि हमें असल में एक "आधुनिक" समाज बनाना है, तो हमें न केवल बाहरी रूप से बदलने की जरूरत है, बल्कि अपनी मानसिकता और दृष्टिकोण को भी बदलने की आवश्यकता है। उनका यह विचार भारतीय समाज की जड़ों में गहरे समाए पुराने ढांचों, रीति–रिवाजों और सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने वाला था।

## निष्कर्ष

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता का विचार न केवल तकनीकी और बाहरी बदलावों से जुड़ा हुआ है, बल्कि यह एक गहरी मानसिक और सामाजिक क्रांति की ओर भी इशारा करता है। मुक्तिबोध ने इस विचार को अपनी कविताओं और लेखन में उजागर किया, जहां उन्होंने भारतीय समाज में फैली हुई असमानताओं, अन्याय, और मानसिक अंधकार के खिलाफ आवाज़ उठाई। उनके अनुसार, सच्ची आधुनिकता तभी संभव है जब समाज की आंतरिक संरचनाओं और मानसिकताओं में परिवर्तन आए। वे भारतीय समाज के लिए एक नई दिशा की ओर इशारा करते थे, जिसमें सतही और बाहरी बदलावों से कहीं अधिक गहरे आंतरिक बदलावों की आवश्यकता थी।

## संदर्भ सूची


1. Akansha Singh. Between modernity and modernism: Reading affect in Muktibodh's translated poetry. Journal of Postcolonial Writing, 2024, DOI: 10.1080/17449855.2024.2307402
2. Sanjay K, Gautam. Modernism and the Birth of Divided Subjectivity in Postcolonial India: A Study of Muktibodh (1917–1964). South Asian Review,2012:33(1):77–90. https://doi.org/10.1080/02759527.2012.11932864
3. Lipon Kumar Mondal. Modernity in Philosophy and Sociology: An Appraisal with Special Reference to Bangladesh. Philosophy and Progress: Vols. LI-LII, January-June, July-December, 2014, 2012, DOI: 10.3329/PP.V51I1-2.17682
4. Sezgin Kızılçelik. Modernity as colonialism, racism, and holocaust Sömürgecilik, ırkçılık ve soykırım olarak modernlik. Journal of new results in science, Journal of Human Sciences,2018:15(4):2012–2028. Retrieved from https://www.j-humansciences.com/ojs/index.php/IJHS/article/view/5547 DOI: 10.14687/JHS.V15I4.5547
5. Gurminder K, Bhambra. Modernity: History of the Concept. International Encyclopedia of the Social & Behavioral Sciences (Second Edition)**,** 2015, 692-696, DOI: 10.1016/B978-0-08-097086-8.03134-2
6. Gerard Delanty, Aurea Mota. Modernity, 2018, DOI: 10.1002/9781394260331.ch55
7. Kristof KP, Vanhoutte K. Modernity: A limboic fool's paradise. In: Limbo reapplied: Radical theologies and philosophies. Cham: Palgrave Macmillan, 2018, 79-94, Doi: 10.1007/978-3-319-78913-2_5.
8. Makumya M'membe. The development of a western-centric notion of modernity and the inclusive reconstruction thereof according to the twail principles. Pretoria student law review, 2023, DOI: 10.29053/pslr.v16i1.4512
9. Jyotirmaya Tripathy. Development Modernity in India, an Incomplete Project: From Nehru to Modi. Bandung,2021:8(1):1-21, DOI: 10.1163/21983534-08010001
10. Wilkie ME. Modernisation, Modern Man and Middleclassness. The Australian and New Zealand Journal of Sociology,1975:11(1):51-54, https://doi.org/10.1177/144078337501100110
11. Hugh Grady. Renewing Modernity: Changing Contexts and Contents of a Nearly Invisible Concept. Shakespeare Quarterly, 1999, DOI: 10.2307/2902359
12. Shmuel N, Eisenstadt. The civilizational dimension of modernity: Modernity as a distinct civilization. International Sociology, 2001, DOI: 10.1177/026858001016003005
13. Komal Prasad Phuyal. Revisiting Representation in South Asian Modernity. Bodhi: An Interdisciplinary Journal, 2024, DOI: 10.3126/bodhi.v10i1.66935
14. Sourit Bhattacharya. Postcolonial Modernity and the Indian Novel: On Catastrophic Realism, 2020.
15. Carol Lynne Symes. When We Talk about Modernity. The American Historical Review, 2011, DOI: 10.1086/AHR.116.3.715
16. Sheila Jasanoff, Sang-Hyun Kim. Dreamscapes of modernity, 2016.
17. Maarten van Bottenburg. 20. Hoe recent is modern? Over de herkomst van 'modern', 'moderniteit' en 'modernisering', en het gebruik ervan in de sociologie, 1990.